थोड़ी सी जगह

सूर्यदेव विमल

सूर्यदेव विमल के इस संग्रह की कविताओं में सभ्यताक्रान्त समय में मनुष्यता के लिए 'थोड़ी सी जगह' बनाने की कोशिश हुई है। कविता की स्वाभाविक भूमि पर कल्पना की डगर सीधे, असीम संभावनाओं की आहट इसमें सुनी जा सकती है। गीत की संवेदना को पारदर्शी भाषा में व्यक्त करते हुए विमल जी अपने देश-काल से विमुख नहीं हैं। लेकिन उनकी प्रकृति प्रेमगीतात्मक ही है। कवि के अन्तर्मन में राग और रूप का एक स्वानुभूत संसार जगमग है। उसकी प्रेमानुभूति स्मृति क धरातल पर पूर्णता की प्रतिति है किन्तु उसका मौजूदा परिदृश्य बूढ़े बरगद का बिम्ब है। वह कभी जवान था, हरा-भरा, सिर पर आकाश ओढ़े। वैसे, वृद्ध हो जाने पर भी उसकी छाया में पँछियों का बसेरा है उसकी डालियों पर घोंसलों में अंडे पलते हैं। लेकिन अकेलापन पीछा कर रहा है कुछ सुनने-सुनान से एकान्त सध जाएगा। पर दुःखमय वर्तमान उसे उन्मुक्त नहीं होने दे रहा।

विमल जी एक ऐसे मनुष्य को प्रतिरूपित करते हैं जिस पथरीली राह पर चलना पड़ा है। जिसका कोई ठौर-ठिकाना नहीं और जिसके लिए सब दरवाजे बंद हैं। वजह कोई हो, कवि अपने को 'भटका हुआ मुसाफिर' ही समझ रहा है। उसे यथार्थ नागफनी के कांटे की तरह चुभ रहा है। मालूम नहीं-कहाँ है मंजिल/ सितारों की छाँव में। या अतल गहराइयों में।' फिर भी एक संकल्प है-'मुझ तो बहुत दूर जाना है। अन्यत्र, कवि लिखता है,-'तुम्हारा ही करिश्मा है। भटकती जिन्दगी गाफिल/खुशी का एक नग्मा है।' कवि फरिश्ता है, कोई और नहीं-जिसने उसके जख्मों को छूकर ही भर दिया। इससे नई रातें हुईं रौशन। वे भी क्या दिन थे ! 'इश्क इजहार में हुस्न दीदार में/फूल खिलते रहे इस तरह प्यार में।'

विमल जी ने दुनिया देखी हैं। उन्हें ज्ञात है-'दीवानगी की राह में मखमली चादर कहाँ ? कवि-कर्म दीवानगी से कम नहीं। 'ज्योति-पथ पर साधना के गीत गाना' कोई छोटी उपलब्धि नहीं। 'विषमताओं की डगर में स्नेह ही सबल रहा है'-कवि अपनी रचनाशीलता का रहस्य खोलता है।

उनके इस संग्रह में माँ पर दो कविताएँ हैं और एक आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री पर भी। दोनों सराहनीय हैं। 'दर्द', 'शिकवा', 'मनुहार', 'रिश्तों का भँवर' जैसी कविताएँ विशेष ध्यानाकर्षण करती हैं। जहाँ नागरिक-बोध प्रबल है, वहाँ प्रतिरोध भी झलकता है। 'परिचय' में आत्म प्रत्यय है-'प्रणय की पहली निशा का/मैं अकेला सजग प्रहरी/खोल अवगुण्ठन, निरखते नयन/होती प्यास गहरी....।

-रेवती रमण

ISBN : 978-93-82177-17-3 **Rs.150.00**

सूर्यदेव विमल

जन्म स्थान : ग्राम-भगवानपुर सिमरा,
थाना-पारू,
जिला-मुजफ्फरपुर (बिहार)।

जन्म तिथि : 02 जनवरी, 1933

शिक्षा : एम. ए. (हिन्दी),
डिप. एस. एड.

रचनाएँ : **'वन्दना के बोल'**
(कविता-संग्रह)
'वीणा के दो तार' (एकांकी)
'परिदृश्य' (लेखमाला)
'भक्तिभजनावली'।

सम्प्रति : पत्र-पत्रिकाओं में स्वतंत्र लेखन।

सम्पर्क : सर गणेशदत्त नगर
रोड नं.-4, भगवानपुर
मुजफ्फरपुर (बिहार)।

चलभाष : 8987215379

थोड़ी सी जगह

सूर्यदेव विमल

समीक्षा प्रकाशन
दिल्ली/मुजफ्फरपुर

ISBN : 978-93-82177-17-3

प्रथम संस्करण
2012

सर्वाधिकार ©
सूर्यदेव विमल

प्रकाशक
समीक्षा प्रकाशन
जे.के.मार्केट, छोटी कल्याणी
मुजफ्फरपुर (बिहार)-842 001
फोन : 09334279957, 09905292801
E-mail : samikshaprakashan@yahoo.com
www : samikshaprakashan.blogspot.com

दिल्ली कार्यालय
आर-27, रीता ब्लॉक
विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली-92
मोबाइल : 08527482726

शब्द-संयोजन
सतीश कुमार

मुद्रक
बी०के० ऑफसेट,
शाहदरा, दिल्ली।

मूल्य
150.00 (एक सौ पचास रुपये)

Thori See Jagah

by *Surydev Vimal* Rs. 150.00

स्वर्गीया जननी
पार्वती देवी
दिवंगत चाचाजी
विश्वनाथ प्रसाद
जिनकी छाया में पला बढ़ा

सूर्यदेव विमल

अनुक्रम

अच्छा लगा / 11
मानव / 12
बालू पर भीत / 15
मृणाल तुम कहाँ हो ? / 17
भटका हुआ मुसाफिर / 19
थोड़ी सी जगह / 21
फरिश्ता / 22
तुम बहुत भा गये / 24
बूढ़ा बरगद / 25
एकाकी मैं / 27
कैदी / 29
एकान्त / 31
दो टूक / 33
कविता / 35
उप संहार / 37
जुनून / 38
माँ तुम कहाँ हो ?/ 40
सामान्य नागरिक / 42
कल्पना / 44
आदमी / 45
वीतरागी / 48
रंगमहल / 50
दर्द / 52
पुनर्जन्म / 53
अन्तरात्मा / 54
प्यासा सावन / 55
विडम्बना / 56
दहलीज / 57

अनिवार्य यात्रा / 58
द्वन्द्व / 60
अलविदा / 61
सिंहावलोकन / 62
जहाँ हमारा आशियाना / 63
जिन्दगी / 64
गीत / 65
अलविदा / 66
परदेसी / 67
खामोश अदा / 68
चमन / 69
माँ / 71
जिजीविषा / 72
भटके हुए लोग / 73
परिचय / 75
मनुहार / 77
दर्द / 79
टूटता मौन / 80
शिकवा / 81
रुबाइयाँ / 82
प्रभात किरण / 84
गजल / 85
विडम्बना / 86
रिश्तों के भँवर / 88
सहारा / 89
रुबाइयाँ / 90
रुबाइयाँ / 92
मैं अकेला / 93
रुबाइयाँ / 95
रुबाइयाँ / 97
उपालम्भ / 98
कब तक मौन रहूँ / 100
माँ का किसुना / 101
अलविदा / 103

अपनी बात

उन्मुक्त गगन में उड़ान भरते ज्योति-विहग की भाँति कवि की कल्पना जब र :नाधर्मिता के क्षेत्र में प्रवेश करती है तब उसके समक्ष अनन्त आकाश की ऊँचाइयों से लेकर माटी की सोंधी सुगन्ध तक का क्षेत्र अपनी विशालता में लहराता रहता है। भोगा हुआ यथार्थ, जिजीविषा की कड़ियाँ एवं आत्मबोध का आधार लेकर दूर-दूर तक जाती उसकी दृष्टि अपने विषय, अपने क्षेत्र का निर्धारण करती है। कहा गया है कि किसी वाद में बंध जाने पर पिंजड़े में बंद पंछी की तरह कविता 'कहो जी आत्मा राम सीताराम' की तर्ज पर अपनी उन्मुक्तता एवं फलक का विस्तार खोकर संकुचित हो जाती है। एक लीक बन जाती है जिस पर उसे चलना होता है। ''लीक छोड़ तीनों चले शायद, सिंह, सपूत'' वाली कहावत उस पर चरितार्थ नहीं होती।

मैं सदैव उन्मुक्तता का पक्षधर रहा हूँ। 'दिल के आइने में है सूरते यार जब जरा गर्दन झुकाई देख ली' की तर्ज पर जब भी किसी भाव का स्फुरण हुआ उसे शब्द रूप देता चला। आत्मतुष्टि या स्वान्त: सुखाय मेरा अभीष्ट रहा है। यह मेरा सौभाग्य रहा कि कॉलेज के दिनों में महाकवि दिनकर एवं बाद में आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री जी का स्नेह-सम्बल मुझे मिलता रहा। मेरी प्रथम कृति **'वन्दना के बोल'** की भूमिका में कुछ पंक्तियाँ लिखकर उन्होंने मेरा उत्साह-वर्धन किया था। उनके न होने का दंश मुझे आजीवन सालता रहेगा।

प्रस्तुत कविता संग्रह **'थोड़ी-सी जगह'** में संग्रहित कविताएँ किसी उद्देश्य या प्रयोजन से नहीं लिखी गईं। जब भी किसी भाव का स्फुरण हुआ, तन्मयता आई, भाव शब्द का रूप लेते गये। मैं किसी भावधारा का कवि हूँ भी नहीं। उन्मुक्तता मेरे स्वभाव में है। मैंने रुबाइयाँ लिखी हैं। प्रेम-गीत लिखे हैं। सामाजिक चेतना के बिम्ब के रूप में कुछ कविताएँ हैं। कुछ तुकबन्दियाँ हैं तो उन्मुक्त छन्द भी हैं।

सामाजिक चेतना, सौन्दर्य बोध, जिजीविषा एवं उन्मुक्तता की विविधताओं से भरा यह संग्रह साहित्य की दृष्टि से कहाँ तक उपयोगी है, मैं कह नहीं सकता। इतना जरूर कह सकता हूँ कि बिना किसी पूर्वाग्रह या लाग-लपेट के अपने कुछ भावों को छन्द या शब्द रूप में ढालने का प्रयास मैंने किया है। उदाहरणस्वरूप 'परिचय' शीर्षक कविता में मैंने लिखा है **''मैं नहीं नक्षत्र कोई/एक छोटा सा दिया हूँ''** वहीं 'मनुहार' में **''तुम कहो तो मैं सितारे तोड़ लाऊँ/माँग में तेरी सजा दूँ/आज फिर दुल्हन बना दूँ।''** 'दर्द की आवाज' शीर्षक कविता की प्रारंभिक पंक्तियाँ हैं **''दाग दामन पे नहीं दिल पे दिये हैं तुमने,/तुम मेरे दर्द की आवाज नहीं।''**

विभिन्न परिस्थितियों में चेतन, अवचेतन मन में संचित भाव विभिन्न रूपों में प्रकट होते रहे हैं और मैं उन्हें शब्द या छन्द रूप देता रहा। इसमें आत्माभिव्यक्ति के सिवा मेरा कोई और उद्देश्य नहीं रहा है। इतना जरूर है कि भावों या शब्दों को छन्दरूप देने पर हृदय में असीम आनन्द की अनुभूति होती है। हृदय में अंकुरित या संचरित भाव बिना किसी दस्तक के लहरों की भाँति उठते और विलीन होते रहते हैं। चेतना अंकुरित हुई कविता जन्म लेती है। जल में उठी तरंगों की भाँति कविता का स्फुरण होता रहत है।

कविता तो क्रमशः बिम्ब और विचार के संगठन में मूर्त्त होती है और धरातल पर उतरती चली जाती है। कल्पना का इस्तेमाल परिवेश की जटिल वास्तविकता को ग्राह्य बनाने के लिए किया जाता है।

अपनी कविताओं में भावों का तारतम्य, कल्पना की सहजता, संवेदना एवं सरलता का पालन करने का मेरा प्रयास रहा है।

इस कविता संग्रह के प्रकाशन का श्रेय मैं श्री चितरंजन सिन्हा कनक, डॉ. राजीव कुमार एवं अमरनाथ मेहरोत्रा जी को देना चाहूंगा। कविता संग्रह का नाम 'थोड़ी सी जगह' डॉ. संजय पंकज जी की विलक्षण कल्पना शक्ति एवं सूझ-बूझ का परिचायक है।

सिंहावलोकन शीर्षक कविता की निम्न पंक्तियों के निहितार्थ की अनुभूति अगर पाठकों को इस संग्रह की कविताओं में होती है तो मैं अपना परिश्रम सफल मानूँगा।

''नित नव उत्सव राग रंग के साज यहाँ सजते थे।
प्यासे नयन इधर आकर अपना मधुघट भरते थे।।''

–सूर्यदेव विमल

'सिन्हा सदन'
सर गणेशदत्त नगर,
रोड नं.-4, मुजफ्फरपुर (बिहार)

◆◆◆

अच्छा लगा

भीनी बसन्ती भोर में
सूनी सड़क के मोड़ से
सहसा तुम्हारा निकल आना,
और चलना साथ में
अच्छा लगा।

दूर वादी में भटकते
वर्जनाओं से उलझते
स्वर्णमृग से चपल मन का
पास आकर ठहरना
अच्छा लगा।

एक ऐसी एकरसता
मौन रहने की विवशता
विजन नीरव आवरण में,
राग रुनझुन गूँजना,
अच्छा लगा।

कल्पना की डगर साधे
साधना की डोर बांधे,
दृष्टिपथ में नत नयन का,
झांकना फिर सकुचना
अच्छा लगा।

मानव

नियन्ता के अंश से उद्भूत
पराक्रम और पौरुष से समादृत
अवतरित हुआ धरा पर
मैं कौन हूँ ?
जीवन धारा की तरंगों पर आसीन
अपरिमेय उत्साह एवं उल्लास लिए
छेड़ देता हूँ जीवन की रागिनी, यौवन-गीत
उत्ताल तरंगों से जूझता
जीवन का भार लिए
मैं करता हूँ तांडव
गाता हूँ सामवेद।
मैं मानव हूँ।
मेरी भुजाओं में असीम बल है,
मैं जीवन देता हूँ, हर भी लेता हूँ
असीम उत्कण्ठा, जिज्ञासा से बेचैन
धरा से अम्बर तक दौड़ लगाता हूँ
कभी थकता नहीं अन्वेषी हूँ
मैं मानव हूँ।
मैं बूंद भी हूँ, समुद्र भी हूँ
चरण रज हूँ, किरीट भी हूँ,

मैंने सागर को उत्ताल तरंगों सहित
चरणों में झुकाया है
हिमकिरीट पर आज भी मेरे चरण-चिह्न हैं।
तुमने मेरे तेवर नहीं देखे।
मैं संसार बसा सकता हूँ।
शीश भी झुका सकता हूँ।
रुडभुंड से धरती को पाटकर
लाशें बिछा सकता हूँ।
तुमने मेरे तेवर नहीं देखे।
मैं मानव हूँ।
आओ प्रेम की बात करें
ममता की, क्रूरता की, हिंसा की
क्षमता की बात करें।
मैं राम भी हूँ, रावण भी हूँ।
मैं कृष्ण भी हूँ, कंस भी हूँ।
मैं जनमेजय हूँ, सात्यकि हूँ, सुधन्वा हूँ।
मैं प्रेयसी का कंठहार
वीरांगनाओं का बलिदान हूँ।
मैं पाषाण भी हूँ, मोम भी हूँ।
असीम संभावनाओं का भंडार हूँ।
मैं मानव हूँ।
मैं जब उमंग में आता हूँ
उत्ताल तरंगों को बांध लाता हूँ।
दिग्भ्रमित भी होता हूँ।
पत्थर की प्रतिभा के सम्मुख
गिड़गिड़ाता भी हूँ।
मैं एक लघु पिंड
असीम संभावनाओं से भरा हुआ।
सृष्टि के मुकुट में मणि सदृश जड़ा हुआ
मैं मानव हूँ।

ग्रह, नक्षत्र, सूर्य, चन्द्र
मेरे लिए अपरिचित नहीं।
अतल सागर में भी
मैंने घर बसाये हैं।
व्योम के वासी मेरे अध्ययन में हैं।
वायु के वेग को मैने निज में समाहित किया है।
सीमाएँ लांघ चुका हूँ।
अणु, परमाणु मेरे मित्र हैं।
मैं हूँ महामानव, धरती का कंठहार
सृष्टि का शृंगार।
मैं संहारक भी हूँ, पालनहार भी हूँ।
स्वयं से अपरिचित
सृष्टि का सुपरिचित।
मैं मानव हूँ।

बालू पर भीत

तुमने कहा ! बालू पर भीत मत उठाओ।
यह टिकेगी नहीं बिखर जायेगी।
गाढ़ी कमाई की पूंजी डूब जायेगी।
सारा परिश्रम भी व्यर्थ जायेगा
दुनिया हंसेगी तुम्हारी मूर्खता पर
तुम बनोगे उपहास के पात्र।
गढ़ी जायेंगी कहानियां तुम पर
छोटे-छोटे चुटकुले
गली, नुक्कड़, चौराहों पर होंगी चर्चाएँ।
मैं थोड़ा रुका।
सोचा ! जय विश्लेषण करूँ।
आत्म विश्लेषण।
पक्ष की विपक्ष की दलीलें
कौंधने लगी मन में।
दिल ने कहा अभियानी बनो।
सिर्फ लकीर मत पीटो
करना है तो कुछ नया करो।
किसने सोचा था, पानी पर पत्थर तैरेगा।
तैरेगा ही नहीं पार भी उतारेगा।
रोती बिलखती सती की जिन्दगी संवारेगा।

संयम, परिश्रम, उत्साह ने बनाई होगी राह।
पलती होगी प्रियमिलन की उत्कट चाह।
अन्त में मैंने फैसला लिया।
मैं बालू पर भीत जरुर उठाऊंगा।
हो सकता है मैं सफल हो जाऊँ।
आधुनिक तकनीकों से
हल्की सामग्री से।
अगर असफल भी हुआ तो कुछ कर जाऊँगा।
इस अवसाद भरे जीवन में
भाग, दौड़ आपा, धापी तनाव भरे क्षणों में।
मेरी चर्चा होने पर लोगों को हंसी आयेगी।
गूंजेंगे ठहाके, मन हल्का होगा।
अवसाद बिखर जायेगा।
संघर्ष भरे जीवन का सम्बल बना
मेरा भी जीवन सफल हो जायेगा।

मृणाल तुम कहाँ हो

मृणाल तुम कहाँ हो ?
दीर्घ अन्तराल में
यादों के झरोखों से
झांकता तुम्हारा बिम्ब
बनती, मिटती रोशनी की लकीरें,
खामोशी के लम्हों में
बिन बुलाये आते सपने
कुछ भी तो बदला नहीं।
सिर्फ बदल गई तकदीर
रोज-रोज मरता-जीता
पल-पल प्रतीक्षा में
तुम्हारी आने की आहट
सुनने को बेचैन हूँ।

मृणाल तुम कहाँ हो ?
जागते में देखता हूँ सपने
नींद तो आती नहीं
दौड़ती भागती जिन्दगी में
बेखुदी का आलम
बिखरे छितराये खिलौनो का हुजूम

सूने आंगन में
गुड्डा, गुड्डी, कुएँ को जाती पनिहारिन
चोर, सिपाही, तोता, मैना
सभी स्तब्ध, अवाक
खड़े हैं तुम्हारी प्रतीक्षा में।
मृणाल तुम कहाँ हो ?

अब न गूंजेगी किलकारी
अब न कूकेगी कोयल !
काट खाता सूनापन
सालता रहेगा हृदय।
चुभते रहेंगे यादों के साये
विजन वन के शून्य अन्तराल में।
गूँजेंगी सदाएँ
मृणाल तुम कहाँ हो ?

भटका हुआ मुसाफिर

कल्पना के जीवंत धारों में
तैरती भावों की मछलियाँ
छोड़ जाती हैं एहसास,
एक आहट।
एक सुनहरे भविष्य में झाँकती आँखें
थाम लेती हैं सपनो की डोर।
नागफनी के कांटों सा चुभता यथार्थ
सारे रंग बिखेर देता है।
तारतम्य टूट जाता है।
ठोस धरातल पर खड़ा
सिकुड़ा, सहमा, स्तब्ध
मान्यताओं का आवरण
नियति के हाथों में
खिलौना बन जाता है।
कौन जाने कहाँ है मंजिल
सितारों की छांव में,
या अतल गहराइयों में।
चेतना सजग करती है
मत बहो भाव धारा में
जीओ यथार्थ में।

यायावर सपनों के महल खड़े करता है।
झूमती, गाती जिन्दगी फिर फिसल जाती हैं
गाड़ी सी सीटी तोड़ जाती है तन्द्रा
उठता हुआ शोर झटके से जगा जाता है
अरे ! मैं तो भटका मुसाफिर हूँ
मुझे तो बहुत दूर जाना है।

थोड़ी सी जगह

मैं ढूँढ़ रहा हूँ अपने लिए थोड़ी-सी जगह।
कहीं भी
गाँव में, देहात में या शहर में
छोटे-छोटे कस्बों की छोटी-सी चहल-पहल में
ऐसा क्यों ?
क्या मैं अबतक अनिकेत था ?
या मेरी दुनिया कहीं गुम हो गई है।
मेरे सपनों की डोर कहीं खो गई है।
नहीं ! ऐसा कुछ भी नहीं है
सब कुछ वहीं का वहीं है।
केवल परिवेश बदल गया है।
शब्दों के अर्थ बदल गय हैं
मान्यताओं का अवमूल्यन हो गया है।
आदर्शों की ऊँचाइयों पर खड़े
इन्सानियत को
अपनो से ही भय लगने लगा है।

फरिश्ता

तुम्हीं ने तो दिये सपने
नई आशा जगाई है
तुम्हारे ही सहारे तो
बहारें लौट आई हैं।
नहीं था अंजुमन कोई
नहीं राहें रवानी थी।
भटकती कल्पना बेचैन
मुफलिस जिन्दगानी थी।
उठे जब भी कदम मेरे
मुकद्दर आजमाने को।
सरे राहे बहारों की
नई दुनिया बसाने को।
जमाने को हुई हैरत
न कुछ पूछा न कुछ जाना।
लगा दीं बन्दिशें लाखों
बनी हर बात अफसाना।
नहीं थी राह कोई शेष
मंजिल तक पहुँचने की
अंधेरा ही अंधेरा था

हुई सूरत भटकने की
फरिश्ते की तरह आकर
उजाला कर दिया तुमने
बने नासूर जख्मों को
छूकर भर दिया तुमने
नई राहें हुईं रौशन
तुम्हारा ही करिश्मा है
भटकती जिन्दगी गाफिल
खुशी का एक नगमा है।
सपने जो दिये तुमने
जमीं पर हम उतारेंगे।
लगन से और मिहनत से
किस्मत हम सवारेंगे।

तुम बहुत भा गये

रात ढलती रही चांदनी की तरह
हम न जाने कहाँ से कहाँ आ गये।
मौन टूटा नहीं पाँव थकते गये
अनकहे शब्द चारो तरफ छा गये।
ये खुला आसमां सर्द ठंढी हवा
अनछुए प्यार की गर्म मदहोशियाँ।
आज दिल को न जाने अभी क्या हुआ
सच कहूँ तो मुझे तुम बहुत भा गये।
इश्क इजहार में हुस्न दीदार में
फूल खिलते रहे इस तरह प्यार में
आज माना कि यह राह मेरी न थी
तुम न जाने कहाँ से इधर आ गये।

बूढ़ा बरगद

बूढ़ा बरगद आज भी खड़ा है
गाँव के किनारे।
मौन, निस्तब्ध, ध्यानस्थ।
दादाजी कहते थे
लटकती शाखों पर झूला झूलते
पेंगे मारते कभी थकते न थे।
चंदोवे सा तना वितान
ठंढी छाँव में फैलती पकुए की गन्ध
आज भी ताजा है, जेहन में।
यहीं टिकती है बारात आज भी।
यहाँ पंचायतें बैठती आई है
बड़े बुजुर्ग, पंच, सरपंच
वादी, प्रतिवादी, गवाह, तमाशबीन
जुटते रहे हैं यहीं,
होते रहे हैं, बड़े-बड़े फैसले
सुलह, समझौता, जुर्माना, सजा
त्वरित न्याय की कचहरी
लगती रही है इसी बरगद की छांव में।
पंछियों का आज भी बसेरा है

घोंसलों में पलते अंडे, बच्चे,
सभी बूढ़े बरगद की संतान हैं।
कौओं ने भी घोंसले लगाये हैं।
सुबह शाम की कांव-कांव से
टूटता है गाँव का मौन।
बट सावित्री के पर्व में
धागे लपेटती कन्याओं के
कोमल कंठों से निकली
सुरीली तान पर
झूमता रहता है बूढ़ा बरगद।
सब कुछ सुनता है, देखता है
पर कुछ बोलता नहीं,
चुपचाप मौन खड़ा है
गाँव का सिरमौर, बूढ़ा बरगद।

एकाकी मैं

उम्र की दहलीज पर खड़ा हुआ
मैं एकाकी
जोड़ रहा हूँ सभी टूटे तार,
उलझी हुई शिराएँ।
यादों के झरोखें से झांकते
अनगिनत रूपहले स्वप्न
आज भी जिन्दा है।
पूर्ण जिजीविषा में,
स्वच्छ स्फटिक सरोवरों में
तैरती हुई मछलियों की तरह।
सारा देखा सुना सच
भोगा हुआ यथार्थ
तरंगित है लहरों की तरह
मानस में
हृदय के बंद कपाटों में।
कभी उत्तेजित हो जाता हूँ
पागलों की तरह
यादों के भवंर में तैरते सर्प
डराते हैं, फुंफकारते हैं

फिर भी विचलित नहीं होता
रूपहले स्वप्न भी प्रकट होते हैं
जिन्हें मैने जिया है
बूंद-बूंद इकट्ठा कर
तरंगों में ढाला है।
वही तो सम्बल हैं,
नींव के पत्थर हैं,
जिन पर खड़ा हुआ मेरा वजूद
कभी लड़खड़ाता नहीं
आज भी बांटता हूँ, दूसरों का दुःख
घाव सहलाता हूँ।
अनेक म्लान मुरझाए चेहरों पर
मुस्कान लाकर धन्य होता हूँ।
मैं तो चला जाऊँगा
यादें रह जायेंगी।
हरी कोमल पत्तियों में
जब भी कोई कली मुसकायेगी,
अपनी व्यस्तता में मुंह मत फेर लेकना
उसे धन्यवाद जरूर कहना।

कैदी

सांझ का सुरमई आंचल
जब फैलने लगता है फुनगियों पर।
बैलों के गले की घंटियाँ
जब देने लगती हैं लौटने की दस्तक
घोंसलों को लौटते पंछी
रात्रि के आगमन की सूचना देते
उड़ते चले जाते हैं।
मैं जड़वत बैठा रह जाता हूँ
सीखचों के अन्दर
कहाँ जाऊँ
मेरा तो कोई घर नहीं
कौन बैठा है मेरी प्रतीक्षा में।
साझ, सबेरे आते-जाते
यही तो प्रश्न कौंधता है
जिसके उत्तर की प्रतीक्षा है।
कभी सोचता हूँ
जिन्दगी बोझ बन गई
काटे नहीं कटती
अनेक यादें, चुभती हैं शूल की तरह

कभी हंसता हूँ अपने पर
कभी रोता हूँ
कभी जड़ होकर बैठ जाता हूँ।
कौन सुनेगा मेरी कहानी
काँटों के विस्तर पर लेटी जिन्दगानी
खड़े करती है अनेक नुकीले प्रश्न
कलेजा छलनी हो जाता है
फिर भी आँसू नहीं निकलते
पत्थर की छाती पर सिर पटकते
आँखों में सूख जाते हैं
मैंने भी तो प्यार किया था
लेकिन अब सोचता हूँ
क्या वह वहशीपन था ?
किसी कीमत पर किसी को पाना
जिन्दगी लेना
प्यार नहीं होता
प्यार उदात्त होता है
वह लूटता नहीं
सब कुछ लुटा देता है
दूसरों की जिन्दगी लेता नहीं
जिन्दगी देता है
प्यार की राह में
खुद को निछावर कर देता है।

एकान्त

खड़ा अकेला चौराहे पर
तुम भी मेरे साथ चलो।
अपनी राह कहाँ तक ढूँढूँ
तुम भी मेरे साथ चलो।
लेकर मुझको साथ यहाँ से बढ़ते जाना
थक जाऊँगा तो तुम मुझे सहारा देना।
खड़ा रहूँगा कब तक ऐसे
तुम भी मेरे साथ चलो।
यहाँ न कोई आगे-पीछे
केवल यह कृशकाया है।
ठहरा हुआ यहाँ हूँ कब से
इधर न कोई आया है।
आगे-पीछे कहीं न कोई
तुम तो मेरे साथ चलो।
अगर सहारा नहीं मिला तो
यहीं खड़ा रह जाऊंगा।
जीवन में आगे क्या-क्या है
कहाँ देख में पाऊँगा।
जो कुछ पाना है पा लूँगा

तुम भी मेरे साथ चलो।
बहुत दिनों के बाद मिले हो
तुम्हें बहुत कुछ कहना है।
ऐसा क्या है जो जीवन भर
आँसू पीते रहना है।
अपनी बीती तुझे सुनाऊँ
अब तो मेरे साथ चलो।

दो टूक

जानता हूँ तेरी पूरी कहानी
जन्म से अब तक
राह से अलग
भटकी हुई जिन्दगानी
छत्र नहीं दण्ड नहीं
ताज नहीं तख्त नहीं
अपने मन के बादशाह
न मान न सम्मान
लिये फिरते थे हथेली पर जान।
झूठी अकड़, झूठी शान।
सख्त अफसोस है
तुझे रहा दिखा न सका।
टेढ़े मेढ़े रास्ते पर चलने से
बचा न सका।
तुमने जीवन का अर्थ न जाना
और न अपने को पहचाना।
क्रूर नियति के हाथों में
मिट्टी का लोंदा बना
ठोकर पर ठोकर खा कर भी

कभी ऊपर उठ न सका।
नीचे ही गिरता गया।
आज जब अदालत में
पुकारा जाता है,
फला सिंह वल्द फला सिंह
हाजिर हो !
हाथों में हथकड़ी लिये
गर्दन नीची किये, जब तुम चलते हो।
मेरा कलेजा छलनी हो जाता है
शर्म से सिर झुक जाता है
क्योंकि मैं ही तुम्हारा अभागा पिता हूँ।

कविता

वर्षा के पानी में भींगते शब्द,
डूबते उतराते अठखेलियाँ करते।
स्वच्छ सुन्दर कमनीय बनकर
जब ठहर जाते हैं तुम्हारी पलकों में
तब एक कविता जन्म लेती है।
मुहावरों के मोहक लिबास में
कल्पना के पंखों पर बैठी
सजी धजी मुग्धा सी तुम
जब छा जाती है दिलो दिमाग पर
तब मैं झूम-झूम कर गाता हूँ।
तुम्हारे बिम्ब को एकटक निहारता
भाव लोक में विचरण करता
बेसुध हो जाता हूँ।
हौले-हौले मुसकुराता, गुनगुनाता
रचता हूँ एक मोहक वितान।
जिसकी छाँव में बैठकर
तुम्हारे मिलन की घड़ियाँ गिनता हूँ।
कौन कहता है, तुम मुझसे दूर हो।
मेरी पुकार क्यों वापस लौट आती है ?

खिड़की की जाली से छनती धूप की तरह
स्निग्ध, सुन्दर तुम्हारा रूप
दिलो दिमाग पर छाता चला जाता है।
कविता पीछे छूट जाती है
और मैं लाचार, विवश होकर
सिर्फ तुम्हें निहारता रह जाता हूँ।

उपसंहार

मैं बैठूंगा यहीं रात भर
तुम जाकर आराम करो
बहुत हो चुकी राम कहानी
अब थोड़ा विश्राम करो।
मौन रहूंगा कब तक ऐसे
आओ दिल की बात करें।
कितने राज दफन हैं इसमें
कब तक ठंढी आह भरें।
जो कुछ छूटा ठिठक गया है
इन पथरीली राहों में।
अब कोई तसवीर नहीं है
इन बेचैन निगाहों में।
कहीं न कोई ठौर ठिकाना
जाऊँगा अब कहाँ रात में
ठोकर खाकर गिर जाऊँगा
लोग हंसेंगे बात-बात में।
मैंने देखा बहुत जमाना,
दिल में कोई चाह नहीं है
बन्द हो गए सब दरवाजे
आगे कोई राह नहीं है।

जुनून

शब्द अगर छोटे पड़ जाते हों,
भाव अगर मुंह खोल न पाते हों,
हमें संभल कर मुंह खोलना है।
जिन्दगी के धरातल पर
अस्मिता की चादर ओढ़े
ऊबड़, खाबड़ ठोकरों से बचना है।
अपनी मंजिल तक पहुँचना है
लक्ष्य को छूना है।
सपने हजार पलते हैं
इन सपनीली आँखों में।
आशाओं के दीप जलते-बुझते हैं।
फिर भी अंधेरे से उजाले की तरफ
राह ढूँढते, हंसते, मुस्कुराते
चलते ही जाना है।
मंजिल तो मिलेगी ही
दिल में अगर जुनून है।
जोश में अगर धड़कता है दिल
फड़कती हैं भुजाएँ
उबलता है खून।

दीवानगी की राह में
मखमली चादर कहाँ ?
जहाँ फौलादी चाहे हैं
राह है वहाँ।

माँ तुम कहाँ हो !

मैं अभिभूत हूँ तुम्हारी रचनाधर्मिता से
तुम्हारी ममता से, सौजन्य से।
यादों के फलक पर चित्रित
तुम्हारा सहिष्णु रुप
बूंद-बूंद सहेजकर धार बनाती
तुम्हारी जिजीविषा।
अंकित है मानस पटल पर,
भोजपत्र पर खिंची लकीरों की तरह।
जागते, सोते, अपनी धुन में
मनुहार करती, निछावर होती
शैशव के भोलेपन की अदाओं पर।
तुम्हारा आंचल
विशाल वट वृक्ष सा छाया देता
तना रहता सिर पर प्रहरी की तरह
हमारा रुदन, हमारा हास
तुझे रुलाता, तुझे हंसाता।
तुम्हारा सारा अस्तित्व
तुम्हारे सारे क्रिया-कलाप
स्वयं पर नहीं, केन्द्रित होते अपने अंश पर।

स्वयं विधाता भी मुग्ध हुआ होगा
सृष्टि के विकास में तुम्हारे योगदान पर।
तुम्हारा शिशु आज भी प्यासा है
तुम्हारी लोरी की थपकियों का
तुम्हारे दुलार का, मनुहार का।
माँ तुम कहाँ हो ?

सामान्य नागरिक

मैं एक सामान्य नागरिक हूँ।
तुम मुझे हर जगह पाओगे।
कभी खास समझ कर मत ढूँढ़ना
नहीं तो ढूँढ़ते रह जाओगे।
मेरा कोई खास ठिकाना नहीं
गलियों, चौराहों पर घूमता मिल जाऊंगा।
थोड़ी-सी आत्मीयता दिखाओगे तो
दास बन जाउंगा।
मुझे गवांर मत समझना,
तुम मेरी थाह नहीं पाओगे।
मेरी आँखों में मुझे देखागे।
तभी मुझे समझ पाओगे
जब शीश महल में रहते हो,
मैं कहाँ याद आता हूँ
पर जब समय निकट आता है
भाग्य विधाता बन जाता हूँ।
एक बात गांठ बांध लो,
बहुत काम आयेगी।
सदा शीर्ष पर रहोगे

मायूसी कभी छू नहीं पायेगी।
कभी ऐंठ में आकर
मुझे ललकारना नहीं।
कभी तुम्हारे दर पे आऊँ तो
दुत्कारना नहीं।
मेरे क्रोध की आंधी से बचना
नहीं तो तिनके सा उड़ जाओगे।
इतनी दूर जाओगे कि
कभी लौट नहीं पाओगे।
अन्त में एक बात और कहे देता हूँ
जब मैं प्रसन्न होता हूँ तो
रंक को राजा बना देता हूँ।

कल्पना

आज मैं चुप नहीं रहूंगी।
मुझे कहने दो अपनी कहानी।
बगुले के पंख जैसी
श्वेत वसना अप्सराएँ
मुझे गोद खिलाती हैं
दुलारती पुचकारती है।
जब भी मैं रोती हूँ।
अंक से लगाकर चुप कराती हैं
अक्षर-अक्षर, शब्द-शब्द
मैने उनसे सीखे।
मैं उन्मुक्त उडान भरती हूँ।
धरती, आकाश, गिरिवर, सागर
सब मेरी जद में हैं।
तुम्हारी हृदय-स्थली, तुम्हारा मानस
मेरा आवास है
मैं हूँ तुम्हारी प्यारी कल्पना।

आदमी

एक चिड़े ने कहा अपने बच्चों से,
चलो आज दुनिया की सैर करायें
अपने ही बनाए अजायबघर में कैद
आदमी दिखाएँ।
बच्चों से पूछा
यह आदमी क्या होता है ?
चिड़ा बोला, बड़ा अजीब
इसे आजतक कोई समझ नहीं पाया
तुम खुद ही देख लेना।
कभी दो पैरों पर, लाठी के सहारे
टुकुटक करता चलता है।
कभी हवा में उड़ जाता है
कभी पाताल छू आता है।
कभी छेड़ता है ऐसी सुरीली तान
मन को मोह लेता है।
कभी बम के धमाके से
धरती कंपा देता है
यह बड़ा ही बहुरूपिया है।
उसे दूर से ही देखना।

निकट कभी मत जाना।
अकेले में मिल जाओगे तो
बड़े प्रेम से सहलाएगा।
फिर थोड़ी देर बाद
भून कर खा जायेगा।
इसे जल्दी पहचान नहीं पाओगे
भोली भाली सूरत से धोखा खा जाओगे।
कभी जटाजूट में, कभी सूट पैंट में
कभी लंगोटी में, कभी धोती में।
कब किस रूप में प्रकट हो जायेगा।
देखते रह जाओगे।
कुछ समझ नहीं पाओगे।
हाँ एक बात जरूर है।
जब अपने असली रूप में होता है,
आँखों से कृपा बरसती है
ध्यानमग्न रहता है, बोलता नहीं
हवा इसके चरण छूती है
बादल नहलाते हैं
पशु, पक्षी चरणों में बैठकर
असीम सुख पाते हैं।
इसकी भुजाओं में असीम बल है।
इसका हृदय कठोर भी है कोमल भी है
इसका दिमाग कोई समझ नहीं सका।
इसके मन की रफ्तार कोई पकड़ नहीं सका।
यह जब क्रोधित होता है, धरती कंपा देता है।
दान करता है तो शीश तक दे डालता है
जिस पर रीझता है सर आँखों पर चढ़ा लेता है
लोग कहते हैं विधाता ने इसे स्वयं बनाया है
यह देव भी है, दानव भी है
काया रूपी पिंजड़े में बंद,

उदात्त चरित्र महामानव भी है
यह अप्रतिम है इसकी तुलना में
कोई आ नहीं सकता
एक कमी है
प्राण ले सकता है, लौटा नहीं सकता।

बीतरागी

आओ साथ-साथ चलें।
कब तक बैठोगे एकाकी,
मौन रहोगे।
ठंढी हवाओं का स्पर्श
कोयल की कूक
भैरवी के अलाप
क्या तुझे आह्लादित नहीं करते ?
ऐसा क्या है ? जिसने तुझे बांध रक्खा है।
उतर गया है दिल की गहराइयों में
तुम अलग-थलग पड़ गये हो
दुनिया की हलचल से
पक्षियों के कलरव से
नवजात की गुदगुदाती किलकारी से।
क्या तीखे व्यंग्य बाणों का दंश
तुझे विचलित नहीं करता ?
कब तक अछूते रहोगे ?
हास से, रुदन से
भावनाओं के ज्वार से
बूंद का समुद्र में समा जाना

एकाकार हो जाना तो अंतिम लक्ष्य है
क्यों न हम अंतिम पड़ाव के पूर्व
समय रहते, नृत्य करती लहरियों का
उठते ज्वार भाटों का आनंद लें ?
विलीन होने के पूर्व, करुणा के शीतल जल से
किसी की पीड़ा का दंश हर लें ?
शोक को हर्ष में बदल दें
आंसू भरी आंखों में
उल्लास का सागर लहरा दें।

रंगमहल

तुम उदास क्यों हो ?
स्वप्न तो स्वप्न होते हैं
धरती पर उतर नहीं पाते।
उड़ जाते हैं पंछी बनकर।
कहाँ आता है पकड़ में नील गगन
हम उसका स्पर्श-भी नहीं पाते।
मैंने तो फूल बिछाये थे,
पलकें बिछायी थीं राह में।
तुम्हीं तो दहलीज तक आकर लौट गई।
फिर तुम उदास क्यों हो ?
तुम्हें तो मिल गया, तुम्हारा अभीष्ट।
शान ओ शौकत, सब कुछ
वैभव की ऊँची दीवार, रूपहले पर्दे।
अभिजात्य का मखमली अवरण।
फिर भी तुम उदास क्यों हो ?
मेरी बात मानो तो
अपने रंग महल के धरातल की
एक खिड़की जरूर खुली रखना।
जब हवा का झोंका आयेगा

घास और माटी की सुगन्ध
जिसके हम आदी थे
जरूर साथ लायेगा
बचपन के सपने, लौट आयेंगे
हर सांस में ताजगी आयेगी।
उदासी थोड़ी देर के लिये ही सही
जरूर दूर हो जायेगी।

दर्द

दर्द तो दर्द है, छिपाये नहीं छिपता
हंसी कभी दिल को छू नहीं पाती
कोई गाये दिल की गहराई से।
जमाना बड़े शौक से सुनता है।
यदि उसमें दर्द पैदा हो जाये
तो आंसू नहीं थमते।
उदास आंखों में दिल का दर्द
साफ झलक जाता है।
आंखों से दिल का रिश्ता
बड़ा पुराना है।
मैं कब से खड़ा हूँ तुम्हारे दर पर
पांव भी दुखने लगने हैं।
एक झिड़की ही सही
दे दोगे तो लौट आउंगा।
बड़ी हसरत थी, तुझे देखूँगी जी भर
जब दीदार हुआ तो जमाने को खबर हो गई।
वो गाते-गाते थक गए
फिर भी वाहवाही नहीं मिली
सर्द आहों से भरे गीत ने
सब को रुला दिया।

पुनर्जन्म

खोज शुरू जीवन धारा की
भटक रहा था इधर-उधर
भ्रमित हो रहा था जाना है
कहाँ किधर ?
शब्द, छन्द तो थे, उनमें आवेग नहीं था।
वह प्रांजल अभिव्यक्ति नहीं थी, ओज नहीं था।
मुख्य धार से कटे-कटे, एकाकी पन में
मेरी तो कोई पहचान नहीं थी।
मैं निराश था, अपने सपनों के बन्धन में
बंधा-बंधा सा
सहसा तुम आ गये कहीं से
धीमे पग से, मेरे पथ में,
कोयल कूकी, छन्द-छन्द जी उठे,
मुक्त हो गया प्रभंजन।
बहने लगी बयार जगा नूतन स्पंदन।
मैंने पूछा तुमसे, कौन कहाँ से आये।
इस प्यासी धरती पर, श्यामल घन बन छाये।
तुम कुछ बोले नहीं जगी मेरी उत्कंठा
तुमने करुणा पूर्ण नयन से मुझको देखा।
वही दृष्टि करुणा की अब मेरा सम्बल है
मेरा कवि जी उठा मिला निर्बल को बल है।

अन्तरात्मा

मैं कभी नहीं बदलूंगी
जैसी हूं, वैसी ही रहूंगी
मैं जब भी कहूंगी, सच कहूंगी
सच के सिवा कुछ नहीं कहूंगी
तुम मुझसे कुछ छिपा नहीं सकते।
तुम मुझे झुठला नहीं सकते।
तुम जब भी भटकते हो
मैं तुम्हें आवाज देती हूँ
सही राह दिखाती हूँ
उचित अनुचित का भेद बताती हूँ
मैं पग-पग पर तुम्हारे साथ हूँ
मैं तुझमें समाहित हूँ।
तुम मेरे आवरण हो, अंतरंग हो
परिस्थिति जन्य दंश जब सालता है
ठोकरें मारता है
मैं ही तुझे सहलाती हूँ।
हिम्मत बांधकर, सहारा देकर
सही राह दिखलाती हूँ
तुम मुझे देख नहीं सकते
छू नहीं सकते।
क्योंकि मैं अलौकिक हूँ
मैं तुम्हारी अन्तरात्मा हूँ।

प्यासा सावन

अभी-अभी तो थोड़ी ठंढी हवा चली है
गंध उड़ी है
भूले बिसरे गीत उतर आये मानस में
छन्द-छन्द में तेरी-यादें भरी पड़ी हैं
भूल सका हूँ कहाँ, मिलन की मादक घड़ियाँ
प्यार भरा मनुहार, बहारों की फुलझड़ियाँ।
जाग उठे हैं सोये सपने
यादों की बारात सजी है
प्यासा सावन भटक गया है
अमराई वीरान पड़ी है
यह कैसी हलचल है मन में,
जाग उठी है सोई आशा।
शायद तुमने भेजा है हँसकर
अपना कोई संदेशा।
मुक्त पवन को अब आने दो
धीरे से कुछ कह जाने दो।
प्यासे प्राणों को सहलाकर
फिर मादकता भर जाने दो।

विडम्बना

एक दिन जग गया सोया सावन
छोटे-छोटे गड्ढे हो गये तब्दील
तालाबों में
मछलियों का घर आबाद हुआ।
लौटने लगी हरियाली
बागों में लगे झूलों पर
गूंजने लगी स्वर लहरियाँ।
मैंने पूछा एक मजदूर से
तुम उदास क्यों हो ?
क्या करूँ बाबू ?
घर बनाया गया सरकारी पैसे से
आधा पैसा दलाल खा गया
सारा घर टपकता है
अब तो कहीं शरण नहीं।
इससे तो अच्छी मेरी झोपड़ी ही थी।

दहलीज

बहुत दिनों पर गया था अपने गाँव
ऊबड़-खाबड़ पगडंडी की जगह
ईंट-बिछी सड़क थी
बीच-बीच में गड्ढ़े भी थे
कुछ पक्की छतदार कोठरियाँ थीं
जहाँ पहले फूस के घर हुआ करते थे
सुना कि छत से पानी रिसता है
एक स्कूल भी खुल गया था
जहाँ खेल रहे थे बच्चे।
देवियाँ बैठी जुएं निकलवा रही थीं।
स्कूल में एक चापाकल भी गड़ा था
जिसका हेड् गायब था
बड़ी निराशा हुई।
फिर दिल में विचार आया
चलो दुआ करें
कोई ऐसा फरिश्ता आए
जो हमारी मानसिकता बदल दे।
भ्रष्टाचार के फन कुचल दे।
आज नहीं तो कल यह आवाज जरूरी उठेगी
इसी धरातल पर सपनों की नगरी बसेगी।

अनिवार्य यात्रा

जिन्दगी ठहरी हुई सी
हाशिये पर
मौन, चुप, निःशब्द
यह किसी प्रतीक्षा ?
श्रान्ति या अभियान वेला
कारवां में भी अकेला।
विवशताओं से घिरा
निरुपाय जीवन
कामनाओं के घनेरे
जटिल बन्धन।
जीर्णता से कल्प की
अनिवार्य यात्रा।
बूंद घट में ही समाहित
पूर्ण सागर।
क्षितिज भी इसमें
इसी में प्राण अक्षर
ज्वार भाटा सदृश
सुधियों की लहरियाँ
अतल-तल से शिखर तक
उठती घटा सी

डगर में भूला निराश्रित
शिथिल तन-मन।
दृश्य पट पर उभरते
मिटते नजारे।
धारा से ज्यों आ रही
कश्ती किनारे
काल की निर्बाध गति
क्या रुक सकी है ?
आज को कल
और कल को आज होना ही नियति है
और चितेरे ! तूलिका को
एक पल विश्राम दे दे
जान लूँ तुमको कहीं
इस बीच अपना नाम दे दें।

द्वन्द्व

तुम हारोगे।
समर शेष में कौन बचेगा,
जिस पर तन मन धन वारोगे।
मोहनिशा में सोनेवाले,
सत्ता के मद में मतवाले।
जनाक्रोश के परशुराम को
पशुबल से तुम क्या मारोगे।
अभी-अभी जो सूर्य उगा है,
महाक्रांति का बिगुल बजा है,
क्यों उसकी ज्वाला में जलकर
अपने कोमल तन जारोगे।
भ्रष्टाचार अभेद्य खड़ा है।
इसमें झंझावात भरा है।
देकर समिधा की आहुतियाँ
ज्वाला को क्या विस्तारोगे ?
खिंची हुई है प्रत्यंचा अब
केवल शर संधान शेष है।
लक्ष्य नहीं है बहुत दूर अब
बस अंतिम अभियान शेष है।
युग धारा के साथ न चलकर
......., तुम हारोगे।

अलविदा

लगेगी जब तारों से होड़
मच जायेगा भीतर बाहर
चलो चलो का शोर।
काल पुरुष बैठा वेदी पर
मांगेगा आहुतियाँ।
करना होगा अर्पण सबकुछ
सारी संचित निधियाँ।
छंट जायेगा अंधकार तब
मुसकायेगी भोर।
मां की लोरी खेल, खिलौने
यौवन की रंगरलियाँ।
जीर्ण जरा की ठंढी आहें
सब जीवन की कड़ियाँ।
जाना होगा छोड़ सभी कुछ
सारे नाते तोड़।
अन्तहीन क्रम जन्म-मरण का
पल-पल का परिवर्तन।
कौन कहे यह किसी लीला
किसका सहज समर्पण।
जिनको तू कहता है अपना
देंगे तुमको छोड़।
नातों रिश्तों की नगरी में
तू तो निपट अकेला।
सुन्दर रंग बिरंगी दुनिया
चार दिनों का मेला।
आएगी जब घड़ी विदा की
सब लेंगे मुंह मोड़।

सिंहावलोकन

कुछ भी तो अब शेष नहीं है
मादकता, मनुहार मदभरी चितवन का बांकापन।
रुप माधुरी पर अपनी रौ में इतराता यौवन।
थके पथिक से नयन ढूंढ़ते मग में शीतल छाया।
कहाँ गई वह स्वप्न सुन्दरी वाली कंचन काया।
आकर्षण अवशेष नहीं है
उन्मीलित पलकों में कितने सुख सपने पलते थे।
मनमोहक मुसकानों में सौ-सौ दीपक जलते थे।
मस्त बहारों के आंगन में तब अवसाद कहाँ था
मादक मधु मकरंद गंध से मधुवन भरा-भरा था।
कोई भाववेश नही है।
कभी यहाँ इस पुष्प वृन्त पर लुब्ध भ्रमर आते थे।
गुन-गुन गुंजन करते मन का राग सुना जाते थे।
नित नव उत्सव राग रंग के साज यहाँ सजते थे।
प्यासे नयन इधर आकर अपना मधु-घट भरते थे।
सपनों का वह देश नहीं है।
चले गए जो दिन बहार के फिर क्या लौट सकेंगे।
अब तो ये वीराने ही अपना इतिहास गहेंगे।
यह अनुक्रम है, यही नियति है, समय कहाँ रुकता है।
धूप छाँह का परिवर्तन रथ यूँ चलता रहता है।
कुछ भी यहाँ अशेष नहीं है।

जहाँ, हमारा आशियाना

न चाहत है हुकूमत की न- दौलत की न शोहरत की।
तमन्ना है जहाँ सारा, हमारा अशियाना हो।
दिले अरमान की खातिर, उठे जब भी कदम मेरे।
यही है आरजू दिल में, तुम्हारा दर ठिकाना हो।
लगी है आग नफरत की, अदावत की जमाने में।
जला दें हम गिले शिकवे, अगर इसको बुझाना हो।
दरिंदों की तरह तुमने, मचाई लूट दौलत की।
फना कर दो हदें सारी अगर सब साथ जाना हो।
बड़े बम के जखीरों से बड़ी है रूह की ताकत।
झुकाओ बन्दगी में सर, अगर यह आजमाना हो।
मिली है जिन्दगी जिनको, जहालत की जलालत की
करें राहें वहाँ रौशन, अगर कुछ कर दिखाना हो।
बहारों से मुहब्बत है, गुलों पर जान देते हो।
खिजाँ के जो बनो रहबर, तभी पीछे जमाना हो।
गुजर जाए अगर यह जिन्दगी गुमनाम ही रहकर
न हों शिकवे जुदाई के न मिलने का बहाना हो।

जिन्दगी

जिन्दगी तुझको कहूँ क्या दर्द या नेमत,
कभी काटे नहीं करती कभी आवाज देती हो।
कभी तनहाइयों की बन्द गलियों में भुला देती
कभी कुछ कर गुजरने का नया अंदाज देती हो।
सफर तुझको कहूँ तो आखिरी मंजिल कहाँ है ?
कहूँ कश्ती अगर तो दिल नशीं साहिल कहाँ है।
बड़ी हैरानगी से हैं भरे जलवे तुम्हारे।
कभी गम की सजा देकर खुशी के साज देती हो।
खुदाई की बलन्दी तुम, तुम्हीं से है जहाँ रौशन।
तुम्हीं जन्नत तुम्हीं दोज़ख, तुम्हीं बंजर, तुम्हीं गुलशन।
उठाए नाज हमने हैं बहुत तेरी अदाओं के
मगर फिर भी छुपाये क्यों सदा हर राज रखती हो
कभी काटे नहीं कटती कभी आवाज देती हो।

गीत

दिन गुजरते रहे रात ढलती रही,
हम न जाने कहाँ से कहाँ आ गये।
न मैं वो रहा फिर न तुम वो रहे,
फलसफे जिन्दगी के बदलते गए।
चाह थी बांट लें हम खुशी और गम,
जिन्दगी की डगर साथ कट जायेगी।
मस्त आलम रहा, बेखुदी में रहे,
यह न सोचा कभी राह रुक जायगी।
जो चमन था महकता तरन्नुम भरा,
सिर्फ तनहाइयों का वहाँ दौर है।
शोखियों में उभरकर चहकती हुई।
बुलबुलों का ठिकाना कहीं और है
मैं न गाफिल हुआ या न बेरुख हुआ
तल्ख चाहत लिए साथ चलता रहा।
कौन जाने कहाँ से डगर मुड़ गई
तुम किनारे हुए मैं फिसलता रहा।
रात बाकी बहुत है कठिन है डगर
कौन जाने कहाँ राह रुक जायेगी।
सिरफिरा एक राही दफन है यहाँ,
बस कहानी यही शेष रह जायेगी।

अलविदा

(आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री)

एक सूरज ढल गया है
　　　अन्तराओं के गगन से।
शान्त निश्चल द्वन्द्ववाची
　　　कर्मवाणी से परे।
जागरण था मंत्र जिसका
अभय वरदानी सरलता।
सर्जना ही सर्जना,
आप्त अभियानी प्रखरता।
दीप्त उन्नत भाल पर
बर्त्तुल लटों का संक्रमण-सा।
बांसुरी गूंजी विजन में
स्वर लहरियों की तरेंगे
काकली से राधिका तक
स्वर्ण द्वीपों के चितेरे
यक्ष सा अभिशप्त जीवन,
गरल पीकर सुधा-वर्षण।
मुग्ध जनमानस प्रबल को
फिर विधाता छल गया है।

परदेसी

बदली-बदली फिंजा यहाँ की
बागों में वीरानी है।
शायद बुलबुल रुठ गई है
मौसम को हैरानी है।
हम तुम पंछी एक डाल के
बहुत पुरानी यारी है।
अब क्यों दूर बहुत जा बैठे,
ऐसी क्या लाचारी है
जो रहते थे रूठे-रूठे,
अब तेरे दीवाने हैं।
यह तेरी आँखों का जादू
या झूठे अफसाने हैं।
परदेशों में दूर बसे जो
शायद घर को आयेंगे
पर जो दिल से दूर हो गए
अब न कभी मिल पायेंगे।

खामोश अदा

मैंने बहुत पुकारा तुझको
जाने कितनी राहों में।
तेरी ही तसबीर बसी है
इन बेचैन निगाहों में।
किसने कहा कि दोस्त नहीं है
ऐसी बातों में मत आना।
खुलते ही दिल का दरवाजा,
बन जायेगा दोस्त जमाना।
मैंने प्यार किया था तुमसे
काश तुम्हारे भी दिल होता।
मिल जाते गर दिल से दिल तब
यह वीरान गुलिश्ता होता।
आना नहीं तुम्हारी महफिल
सुननी नहीं तुम्हारी तान।
हम तो जानेमन तेरी
खामोश अदाओं पे कुर्बान।

चमन

कब लेता है चमन किसी से
मोल बहारों की खुशबू का।
पहले दिन की कुर्बानी से,
तय होता है सौदा दिल का।
जिसने चमन लहू से खींचा।
ये दिल उसका शैदाई है।
आओ बीज अमन के बोएँ
सजदे की बारी आई है।
शोर बहुत है, बुरा जमाना
दुनिया कितनी हरजाई है
झांक गिरेबां में खुद देखो।
भीतर कितनी सच्चाई है।
बात बहुत हो चुकी खिंजां की
जिक्र बहारों का आने दो।
सुने बहुत कांटों के किस्से,
कलियों से जी बहलाने दो।
नफरत की चलती जब आंधी
चमन उजड़ते दिल बंट जाते।
प्यार करे राहों को रौशन,

मिलती मंजिल हंसते-गाते।
आओ चमन सजाएँ अपना,
फूल अमन के यहाँ उगायें।
रहे न दिल में नफरत बाकी
बदी जहाँ से खुद मिट जाए।

माँ

माँ तुम्हारी याद आई आज।
शून्य में जैसे तरंगित तान कोई,
विजन वन की रिक्तता को भर गई हो।
क्षीर सागर की भटकती लहर जैसे
तृषित मरु को सिक्त शीलत कर गई हो
माँ तुम्हारी याद आई आज।
स्नेह सलिला सरलता की मूर्ति पावन।
अंक में पाता जहाँ विश्राम जीवन।
गोद ममता की तुम्हारी, छाँव शीतल।
भाव विह्वल ह्रदय करता चरण-वन्दन।
बादलों के बीच जैसे तड़ित रेखा।
असित बंधों को उजागर कर गई हो।
माँ तुम्हारी याद आई आज।

जिजीविषा

एक दीपक जल रहा है
शान्त, चिरनिर्द्वन्द्व, निर्भय
सांस में हर एक ही लाय।
ज्योति-पथ पर साधना के
गीत गाता चल रहा है।
हृदय में कोई न संशय
जय मिले या हो पराजय।
विषमताओं की डगर में
स्नेह ही सम्बल रहा है।
प्रबल झंझावात गर्जन
या तड़ित ऊर्जा विसर्जन।
एक दृढ़ संकल्प भास्वर
हृदय तल में पल रहा है।
तिमिर को देता पराजय
प्रभा का भंडार अक्षय
गरल, अमृत धार बनकर
प्राणमन में ढल रहा है।

भटके हुए लोग

हिंसा की सौगात बांटते,
गोली जिनकी भाषा है
छिप कर करना वार
यही तो दहशत की परिभाषा है।
नफरत अमन चैन से इनको
ये खूंखार दरिन्दे हैं।
कहते हैं यह उसकी मर्जी
हम तो उसके बन्दे हैं।
इनको प्यार बहुत आँसू से
चीखों के मतवाले हैं।
पत्थर हैं, इन्सान नहीं
पर कहते हम दिलवाले हैं।
इन्हें बुलाते पास नहीं
क्या जलवे मस्त बहारों के।
नील गगन के इन्द्रधनुष
ये साये चांद सितारों के।
कैसा धर्म हुआ यह जो
हिंसा का पाठ पढ़ाता है
करता मन को दिशाभ्रमित

मानव दानव बन जाता है।
यह जिस्म खुदाई नेमत है
जिसमें वह खुद ही बसता है
वह नेक खुदा का बन्दा है
जो सबको एक समझता है।
धर्म नहीं जो विधवाओं के
आंसू पीकर पलता है
मजहब कैसा जो लाशों के
ढेर बिछाता चलता है।
किसने दिया उन्हें यह हक जो
बांटे दुनिया फिरकों में।
खाक बना दें हरे चमन को
बहशीपन की लपटों में।
भटक गए जो खुद राहों से
वो क्या राह दिखायेंगे।
सारी दुनिया कब्र बनाकर
खुद उसमें सो जायेंगे।

परिचय

मैं नहीं नक्षत्र कोई
एक छोटा सा दिया हूँ
स्नेह-सम्बल लिए
तम की डगर पर चलता रहा हूँ
हृदय में संकल्प,
उन्मीलित नयन में स्वप्न अगणित।
झेलता संघर्ष
जग की जटिलताओं से अपरिचित।
मार्ग दर्शन हित
किसी प्राचीर पर जलता रहा हूँ।
प्रणय की पहली निशा का
मैं अकेला सजग प्रहरी
खोल अवगुंठन, निरखते नयन
होती प्यास गहरी
लाजवन्ती के करों से
मैं सदा बुझता रहा हूँ।
सांध्य जीवन शान्त
जैसे लग रही कश्ती किनारे।
आ गई मंजिल तुम्हारी

शून्य में झांकी पुकारे।
कापंती लौ बुझा
कटु सन्देश यह देता रहा हूँ
दूर तक जब हो बयाँबा,
रात का गहरा अन्धेरा
पथिक आकुल दिग्भ्रमित हो
ढूँढ़ता कोई सहारा।
दूर से आशा किरण बन
राह दिखलाता रहा हूँ।
मैं नहीं नक्षत्र कोई
एक छोटा सा दिया हूँ।

मनुहार

तुम कहो तो मैं सितारे तोड़ जाऊँ
मांग में तेरी सजा दूँ
आज फिर दुल्हन बना दूँ।
क्या हुआ जो अब नहीं मधुमास अपना
जिसे हमने जिया अब है एक सपना
तुम कहो तो फिर बहारों को बुला दूँ
फूल की डोली सजा दूँ।
आज फिर दुल्हन बना दूँ।
रात की काली छटा परछाइयों को
शूल सी चुभती हुई तनहाइयों को
इन्द्रधनुषी छटा का आंगन बना दूँ
आज फिर दुल्हन बना दूँ।
कौन जाने किस डगर पर रात होगी।
साथ छूटा फिर न कोई बात होगी,
दो घड़ी की जिन्दगी उत्सव बना दूँ
आज सारे गम भुला दूँ
आज फिर दुल्हन बना दूँ।
चांदनी हो या अंधेरी रात हो।

हर घड़ी मेरा तुम्हारा साथ हो।
मैं बहारों की नई दुनिया बसा दूँ।
फूल की रानी बना दूँ।
आज फिर दुल्हन बना दूँ।

दर्द

दर्द दिलकश है इसे दिल में बसाना है
दर्द की गहराइयों में डूब जाना है।
दर्द देता है जुदाई को नई पहचान।
दर्द का अवसाद बन जाता कभी वरदान।
दूसरों के दर्द को अपना बनाना है।
दर्द ही लिखता रहा है विरह का हर गीत।
दर्द की दीवानगी है भक्ति का संगीत।
आंसुओं से दर्द का रिश्ता पुराना है।
दर्द को जिसने जिया वह बन गया फौलाद।
दर्द की दुश्वारियों में खुदा आता याद।
डूबकर मंझधार में उस पार जाना है।
दु:ख पराया जिसे देता दर्द का एहसास।
बिन बुलाए खुदा रहता सदा उसके पास।
कशमकश से खुदी को ऊपर उठाना है।
दर्द ही तो दे गया था प्रथम कवि को छन्द
माँ निषाद ! कहा ऋषि ने किए आँखें बन्द।
दर्द का उपहार खुशियों का खजाना है।
दर्द तो जिन्दादिली का दूसरा है नाम।
व्यर्थ में करते रहे हैं हम इसे बदनाम।
दर्द के संदेश को आगे बढ़ाना है।

टूटता मौन

आँखों से आँसू बह निकले
अन्तर की पीड़ा कौन सहे।
दिल ने खाई हो चोट अगर
तो वह भी कब तक मौन रहे।
जब साथ चले थे हम दोनों
यह दुनिया कितनी प्यारी थी।
सपनों के इन्द्रधनुष सजते
मधुबन की शोभा न्यारी थी।
जब चलना हो अंगारों पर
कलियों की चिन्ता कौन करे।
जाने अनजाने ही दिल ने
ये राह चुनी थी अनजानी।
आखिर वो निकली बन्द गली
ये किस्मत थी या नादानी।
सांसों में जिसने आह भरी
फरियाद उसी से कौन करे।
जो स्वप्न संजोये थे हमने
टूटे तिनकों सा बिखर गए।
अरमानों की बगिया उजड़ी
जाने वो दिन अब किधर गए।
तू बीती बात भुलाता चल
दिल से ये बातें कौन कहे।

शिकवा

दाग दामन पे नहीं दिल पे दिये हैं तुमने,
तुम मेरे दर्द की आवाज नहीं।
जो भुला दे सभी गम और शिकवे,
तुम दिले बेताब का वो साज नहीं।
मैं बहारों की जमीं से गुलाब चुनता हूँ।
अश्क के मोती भी इस दामन में पिरोता हूँ
एक नाचीज हूँ सरताज नहीं।
सुना है दिल की दुआओं का असर होता हैं
हर बदी को तहे दिल से दुआ देता हूँ।
मैं तुझे जाने वफा जाने जिगर भी कहता।
पर तेरा दिल में आने का वो अन्दाज नहीं।
जर्द आलम है रात गहरी है
चांद की नजरें भी तारों पर कहीं ठहरी है।
जिन्दगी तुझसे करू क्या शिकवा,
दर्द बयां करने को अल्फाज नहीं।
जब कहीं से कोई आवाज बुलाती है मुझे।
यही लगता है कोई आह कहीं उभरी है।
दिल यही कहता है चाहत को कोई नाम न दूँ
खत्म क्या होगा वो जिसका कोई आगाज नहीं।

रुबाइयाँ

1

वो गुजर गए इधर से
आई गुलाब की खुशबू
आज जाना कि चांदनी में भी
सुगन्ध होती है
हासिल नहीं होता कुछ भी,
आंसू से सर्द आहों से।
जब दिल में जुनून उठता है
तकदीर बदल जाती है
मैं कैसे करू याद तुझको साथी
अब तो कारवां बहुत दूर निकल आया है।
इतना जरूर है जब भी अन्दर झांका
तुझे सदा दिल के पास पाया है।
उनको देखा जो अपने दर पर
तो सब्र का दामन छूटा।
बड़ी मुद्दत के बाद,
आज खुदा याद आया।
क्या जरूरत है आपको
आरजू की, गिले शिकवे की।
आपकी एक मुसकान ही
मेरे लिए काफी है।

तुम जिधर से गुजर जाती हो
बसन्त आता है
तुम जब मुसकुराती हो तो
बसन्त आता है
तुम्हारी एक चितवन पे
खिल उठते हैं सैकड़ों गुलाब
तुम अगर गले लग जाओ तो
आ जाएगा हुस्न का सैलाब।

2

जाने क्यों आजकल वो दूर-दूर रहते हैं
मिलने पर न आखों से न जुबाँ से कुछ कहते हैं।
बातें हो न हो इससे क्या फर्क पड़ता है।
वो तो मेरे दिल के आईने में सदा रहते हैं।
दिल जब खाता है चोट तो इश्क जबां होता है।
जब आँखें मिलती हैं तो हुस्न जवां होता है।
जमाना पैदा करे लाख दुश्वारियां फिर भी।
दो दिल मिलते हैं तो खुदा गवाह होता है।
मंदिरों मस्जिदों में जाकर मानते हो मनौतियां।
इबादत सौदा नहीं यह तो दिल की सदा है।
खुदा व्यापारी नहीं सिर्फ प्रेम का भूखा है
कभी दिल से पुकारो तो तकदीर बदल जायेगी।
मैं हम सफर हूँ, क्यों न हम साथ-साथ चलें।
राहें आसान होंगी दिल भी बहल जायेगा।
दुनिया को हो शिकायत तो कोई परवाह नहीं।
इश्क की दुनिया में नाम मिसाल बन जायेगा।
बात मंदिर की हो या गुरुद्वारे की
चर्च की हो या इमामबाड़े की
मत कहो कि यह खुदा का घर है
खुदा तो उस दिल में रहा करता है
जहाँ बेपनाह मुहब्बत का दिया जलता है।

प्रभात किरण

बुझता हुआ चिराग धुआं देता है।
अब ले रहा हूँ विदा बता देता है।
तम हार गया आ न सका कभी पास में।
था विजय नाद गूंज रहा सांस-सांस में।
उत्सर्ग का परिणाम सुखद होता है।
सन्मार्ग पर चलें सदा सुकर्म यही है।
परहित से बड़ा कोई भी धर्म नहीं हैं
अपनो में न गैरों में कभी किया भेदभाव।
वह बन गया परमहंस मिट गया दुराव।
हर दिल में अमिट छाप छोड़ जाता है।
जिसने जिया पराया दुख बन गया महान।
शाश्वत समन्वय का यही है विधान।
हर शिव को नीलकण्ठ बना देता है।

गजल

हम तो सिर्फ फिदा होकर हो गए बदनाम।
तुमने सरेआम दिल लूटा हो कोई शिकवा न हुआ।
हासिल नहीं होता कुछ भी आंसू से सर्द आहों से।
जब दिल में जुनून उठता है, तकदीर बदल जाती है।
क्यों इतना गुरुर करते हो ताकत पर शान वो शौकत पर।
ये दुनिया ये दौलत किसी की जागीर नहीं।
अपनी बरबादी की दासतां सुनाऊँ किसको।
जो हम सफर थे वही सितमगर निकले।
हमने उनकी तरफ नहीं देखा तो वो नाराज हुए।
हाय !
हम तो उनकी उसी अदा के दीवाने हैं
जहाँ नेकी है वहाँ खुदा होता है
जे जज्बात नहीं हकीकत है प्यारे।
गुनाह से गुनाह कभी मिटता नहीं
उसे तो मुहब्बत की जरूरत है प्यारे।

विडम्बना

जीवन की संध्या में उठता है आर्त्तनाद,
बेटा न पूछता है, बेटी तो पराई हैं
जीवन-रथ ठहरा सा राहें आसान नहीं।
पत्नी की कमर झुकी सांस फूल आई है।
नयनों की ज्योति क्षीण दूभर अखबार है।
कितना कृतघ्न, कष्टदायक संसार है।
याद करो हे महान ! अपनी कहानी को।
मस्ती की लहरों पर झूमती जवानी को।
आती थी चिट्ठी जब गांव से यदा-कदा
बूढ़े बां-बाप की लिए हुए व्यथा-कथा।
होठ सिकुड़ जाते थे, क्रोध भी हो आता था।
खा लिया हो कुछ तीता यों मुंह बनाता था।
भेजता था उत्तर पिजाजी को हो प्रणाम।
अभी आ सकूँगा नहीं पेंडिंग है बहुत काम।
हाकिम करारा है, रातदिन खटाता है
छुट्टी का नाम सुन, तुरत भड़क जाता है।
हाथ भी है खाली कुछ अधिक न कर पाऊँगा।
साथी से पैसे ले शीघ्र भेजवाऊंगा।
आते क्षण मंदिर में रोज सिर नवाता था।

लौटती में हर दिन प्रसाद भी चढ़ाता था।
कहते पुजारी गण बड़े पुण्यवान हैं।
भक्तों में भक्त बड़े बाबू तो महान हैं।
शायद न जानते हों कैसा खिलाड़ी था।
और कुछ नहीं सिर्फ अर्थ का पुजारी था।
केवल माँ बाप नहीं देव को भी ठगता था।
ऊपर से महासरल महासंत लगता था।
अब क्यों पछताते हो रोते, चिल्लाते हो
बेटे-बेटी को व्यर्थ दोष क्यों लगाते हो।
बेटा कर रहा वहीं जो कुछ तुम करते थे।
अपना कर्त्तव्य छोड़ पैसों पर मरते थे।
कर्म या अकर्म कभी व्यर्थ नहीं जाता है
इस हाथ करता है उस हाथ पाता है।

रिश्तों के भंवर

कामनाओं की डगर में मौन चलता जा रहा हूँ।
आज रिश्तों के भंवर में मैं पराया हो गया हूँ।
जो कभी था स्वप्न मादक आज वह दु:स्वप्न सा है।
चाहकर भी नहीं भूला आह ! यह कैसी व्यथा है।
जो कभी था आज उसकी मात्र छाया रह गया हूँ।
था समर्पित जिन्हें जीवन आज वो अनजान से हैं।
मिल रही जिनसे उपेक्षा वो हमारे प्राण से हैं।
झेलने को दंश अगणित क्या बनाया ही गया हूँ।
अब नहीं है शक्ति मुझमें जो नई दुनिया बसाऊँ।
अब नहीं है युक्ति कोई जो विगत में लौट जाऊँ।
थक गये हैं पाँव फिर भी मैं चलाया जा रहा हूँ।
आज रिश्तों के भंवर में मैं पराया हो गया हूँ।

सहारा

सांझ ढले, दीप तले
सिमटी अंधियारी सी,
क्षीण हुई आशा ने
तुम्हीं को पुकारा है।
गहरे मंझधार बीच
डूब रही नैया को,
सुनकर पुकार आर्त्त
तुम्हीं ने उबारा है।
एकाकी दुर्बल मन
दुर्गम भवजाल सघन।
भरमाती भूलों को
तुम्हीं ने सुधारा है।
निर्झर, गिरि, सरिता, वन,
रवि, शशि, निस्सीम गगन।
अपनी सुन्दरता से
तुम्हीं ने संवारा है।
हर ले भव व्यथा भार,
तेरी करुणा उदार
शिथिल हुए प्राणों को
तेरा सहारा है।

रुबाइयाँ

तुम याद आओगे जरूर
ये तुम्हारी मेहरबानी है।
हम मुझे भुला न सकेंगे
ये हमारी कद्रदानी है।
हसीं हो हमसफर कोई
डगर आसान होती है।
कदम उठते तरन्नुम में
नजर मुसकान होती है।
जाम टकराओ तो सही
जश्ने वफा शबाब पर है।
फिर मिलें या न मिलें
हसरत कोई बाकी न रहे।
रात बहुत बीत गई
आज यही रुक जाओ।
ये हुस्न ये जवानी
और कहाँ पाओगे।
दर्द जो तुमने दिया
उसे संभालकर रक्खा है।
तुमको दिल दिया है

कोई सौदा नहीं किया
तूने जो दर्द दिया है उसकी दवा भी नहीं
रात कटती नहीं नींद आती नहीं।
तूने जो दर्द दिया मेरे बहुत काम आया
अब तो हर दर्द से महफूज हूँ मैं।
मैं मुसाफिर हूँ अकेला, दूर जाना है
तुम अगर साथ चलो तो कुछ बात बने।

रुबाइयाँ

जाम टकराओ तो सही, गुले गुलजार बाकी है
तुम दिल में उतर आई हो, दीदार बाकी है।
मत कहो ऐसा कि जमाना बड़ा जालिम है
दर्द देता है तो दवा भी वही देता है।
हम तो बदनाम हुए सिर्फ तुम्हारी खातिर
पास आओ तो दिल को जरा सुकून मिले।
मैं बहारों को बुलाकर यहाँ आया हूँ
दर्द जब हद से बढ़ेगा तो ये दवा देंगे।
बन्द कमरों के अफसाने कहाँ जायेंगे
अब जुबां पर ही इबारत ये लिखी जायेगी।
चोट खाकर भी जो उफ तक नहीं करते थे।
आज हाथों में वही खंजर लिये फिरते हैं।
दर्द जो तुमने दिया मेरे बहुत काम आया
एक तोहफे की तरह दिल में सजा रखा है।
तुम कहो या न कहो, बात नहीं रूकने की
जुबां खुले न खुले नजरें ये भेद खोलेंगी।

मैं अकेला

जीवन की समतल राहों में
चलते रहने का आदी मैं।
हरित वाटिका की छाया में
विचरण करता राही मैं।
ढूँढ़ रहा हूँ, जिजीविषा की
शान्त, शीतल वादियों में
अन्तर्मन का पराग।
जो शायद कहीं खो गया है
कल तक जिसकी शीतलता
मुग्ध बासन्ती बयारों सी
छायी थीं मेरे आकाश में।
जो करती थी अमृत वर्षण
बन कर चांदनी
जाने आज कहाँ खो गई है।
अन्तर्मन की कशमकश में,
शान्त झील में उठती लहरियाँ
क्यों मुझे कर रही बेचैन।
समझ नहीं पा रहा हूँ
वह क्या था जो खो गया है।

वह सूत्र पकड़ में नहीं आ रहा हैं
मैं भूल रहा हूँ वह आर्ष वाक्य
जो कामनाओं की वादी में
अमृत धारा बनकर--
नई राहें दिखाते हैं।
भर देते हैं शून्य में तरंगे
उल्लास के मधुर क्षण,
संध्या होने को आई, राह बहुत शेष है।
कोई संगी साथी भी नहीं
क्या कर सकूंगा पार
शेष दुर्गम घाटियाँ
या इस अनन्त पथ पर,
स्नेहहीन अनाम दीप सा
बुझ जाऊँगा।

रुबाइयाँ

तुम जिधर से गुजर जाती हो
बसंत आता हैं
तुम जब मुसकुराती हो
बसंत गाता है।
तुम्हारी एक चितवन से
खिल उठते हैं सैकड़ों गुलाब।
तुम गले लग जाओ तो
आ जायेगा हुस्न का सैलाब।
जाम टकराओ तो सही,
जश्नेबहार बाकी है।
दिल पर मदहोशी की
बौछार अभी बाकी है।
हम तो बरबाद हुए सिर्फ तुम्हारी खातिर
रात आंखों ही आँखों में
गुजर जाती है।
सिर्फ अक्स से ही
दिल हो गया पागल।
हुस्न के जलवे का
दीदार अभी बाकी है।

मैं कहूँ या न कहूँ
दिल तो तुझे बुलाएगा।
रात की चांदनी में
प्रेमगीत गायेगा।
दिल कहता है यही
बीते दिन पतझड़ के।
हुस्न में यौवन की
बहार अभी बाकी है।

रुबाइयाँ

हुस्न वालों की गली में हो गई है शाम।
सच कहूँ तो व्यर्थ ही हम हो गये बदनाम।
राह रौशन थी, मगर दिल में अंधेरा था
जश्न में तन्हाइयों का एक घेरा था।
खुशी की हर एक कोशिश हो गई नाकाम
हम सफर कोई नहीं हमराज होगा कौन।
कल्पना बेचैन दिल की आरजू भी मौन
हसरतों के मोन साये सिसकते गुमनाम।
दे रहा उजड़ा गुलिश्तां दर्द का संदेश
अब कहाँ वह वादियाँ वह रौशनी का देश।
नयन प्यासे ही रहेंगे अब कहाँ आराम।

उपालम्भ

मैं भी तेरा तू भी मेरा
फिर भी क्यों अनजानापन है।
तन मन धन सब तुझको अर्पित
फिर भी क्यों बेगानापन है।
तुझे बुलाकर हार गया मैं,
क्यों मुझको अपना कहते हो।
जिसे बनाया अपने हाथो,
उससे छिप कर क्यों रहते हो।
ये जग तेरा खेल-खिलौना
हम तो माटी के पुतले हैं।
बनना, मिटना, चलते रहना
मोह निशा के सब सपने हैं।
जन्म-मरण के दो घेरों के
बीच खिंची है जीवन रेखा।
प्यासे नयन रहे प्यासे ही
तुझे न इन आँखों से देखा।
मैंने बहुत पुकारा तुमको,
जाने कितनी ही राहों में।
तेरी ही तसबीर बसी है,
इन बेचैन निगाहों में।

ये जग तो जागीर नहीं है
आना है तो जाना भी है।
भूल-भुलैयाप की नगरी में
कुछ जाना पहचाना भी है।
सांझ सबेरे सोते जगते,
अब तो केवल चाह यही है।
चलता रहूँ तुम्हारे पथ पर
मधुर-मिलन की राह यही है।

कब तक मौन रहूँ

कब तक मौन रहूँ ?
दर्द की पीड़ा सहूँ।
रोता, बिसूरता
अपने को कोसता रहूँ।
तुमने तो सिर्फ स्वप्न दिये,
जिनकी डोर तुम्हारे हाथों में थी।
मैं तो केवल माध्यम था
जीवन्तता का नाटक खेलता
कृत्रिम हंसी हंसता
संग-संग चलता
छया नट की तरह, उछलता-कूदता
तुम्हारा दिल बहलाता रहा।
तुमने जब चाहा, डोर खींच दी।
मैं रुक गया।
तुमने इंगित किया मैं चल पड़ा।
तुमने दिखाये कितने सब्ज बाग
आशाओं की तरंगे उठीं
फिर डूब गई जैसे हिम पात हुआ।
जी-करता है तुम्हारा मुखौटा उखाड़ दूँ।
बिछ गई बिसात है, भाग नहीं पाओगे
अपने ही जाल में फंस कर रह जाओगे।

माँ का किसुना

माँ तुम कहाँ हो ?
बचैन है तुम्हार किसुना
एक झलक पाने को।
तुम्हारी लोरी की लहरों में
डूब कर सो जाने को।
यादों की नागफनी से बिंधा,
व्यस्तताओं से घिरा।
मखमली पर्दों के पीछे बैठा,
सर, हुजूर से सम्बोधित,
तुम्हारा किसुना
अब बन गया है रामकृष्ण सर।
अब कहाँ है वह मस्ती,
वह अल्हड़पन
तुम्हारा सम्बोधन, रे किसुना !
अभी के हुजूर से कई गुना भारी था।
आह्लादकारी था।
माँ तुम कहाँ हो ?

थोड़ी देर के लिये ही सही

एक बार आ तो जाओ।
आना तो अपनी वह छड़ी जरूर लाना
जिससे मुझे मारने का नाटक किया करती थी।
जोर से नहीं लगे यही ध्यान रखती थी।
तुम आओगी भी तो मुझे कहाँ ढूँढ़ पाओगी।
तुम तो किसुना का पता पूछोगी
राम कृष्ण सर कह नहीं पाओगी।
मेरी बात याद रखना
कहीं से भी जोर से किसुना पुकारना।
मैं जहाँ भी रहूँगा दौड़ा चला आउंगा
आकर तुम्हारे चरणों में लोट जाउंगा
माँ तुम कहाँ हो ?

अलविदा

मैं तुझे छोड़ चला जाउंगा।
तुम मुझे दर्द की दवा देना।
हर घड़ी याद में बिताउंगा।
तुम मुझे याद से मिटा देना।
बंद होठों में तूफान छिपा होता है।
सर्द आहों की तपिश खाक बना देती है।
जो बिछड़कर भी दिल से जुदा नहीं होते
याद उनकी हमें अक्सर रुला देती है।

थोड़ी सी जगह

सूर्यदेव विमल

समीक्षा प्रकाशन
दिल्ली/मुजफ्फरपुर

₹150.00

9 789382 177173